शिव बाबा याद है

सम्पूर्णता की समीपता के विशेष आठ लक्षणों के सम्बन्ध में प्रतिदिन अटेंशन व अभ्यास के लिए ''विशेष पॉइन्ट''

दिनांक-17 सितम्बर से 18 अक्टूबर 2012 तक

योग की अवस्था को ज्वाला सवरूप बनाने के लिए हम सभी लगन की अग्नि को जगाये रखे। यह अग्नि सदा प्रज्जवलित रहे उसके लिए सदा यही लग्न लगी रहे मुझे स्वयं को एक मास में सम्पूर्णता के समीप लाना ही है। सम्पूर्णता की समीपता के लक्षणों को मुझे स्वयं में बढ़ाना ही है।

स्म्पूर्णता की समीपता के ये मुख्य आठ लक्षण हमारे मे वृद्धि को पाये उसके लिए हमें स्वयं के अटेन्शन व अभ्यास के साथ-साथ हमें कार्य क्षेत्र अथवा दैनिक दिनचर्या में भी इनहें स्वयं मे बढ़ाने के लिए अपनी लग्न को दिन प्रतिदिन और ही तेज करते जाना है। हमारी ऐसी लग्न से हम समय व संकल्प के अनमोल खजाने को सफल करते व्यर्थ से मुक्त होंगे और बाप दादा के दिल तख्तनशीन बन सकेंगे। स्वपसन्द के साथ-साथ प्रभुपसन्द व लोक पसन्द का सर्टीफिकेट भी सहज प्राप्त कर सकेंगे।

इसके लिए एक लक्षण को विकसित करने के लिए चार दिन तक विशेष अभ्यास, मनन चिन्तन व अनुभव को बढ़ाते हमे सदाकाल के लिए उसे जीवन काी शोभा बनाना है। सो इसी सम्बन्ध में **सम्पूर्णता की समीपता के विशेष आठ लक्षणों के सम्बन्ध में प्रतिदिन अटेन्शन व अभ्यास के लिए विशेष पॉइन्ट**-

सम्पूर्णता की समीपता का पहला लक्षण- **कहना और करना एक। कहा अर्थात किया, कहा अर्थात हुआ**

17-09-2012: ब्रह्मा बाप से प्यार अर्थात ब्रह्मा बाप का कहना और ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी का मानना। प्यार अर्थात न्योछावर। तो किस पर न्योछावर होंगे। बाप दादा की आज्ञा पर। तो जो बाप ने बोला वह हमने किया। तो ऐसे बाप का कहना और मेरा करना।

18-09-2012: दादी जी का कहना और मेरा करना। जैसे बाप दादा से प्यार है ऐसे बाप समान दादी जी से भी दिल का प्यार। जब प्यार है तो प्यार वाले के एक-एक शब्द से भी प्यार होता है। तो दादी जा ने कहा और दिल के प्यार से मैने किया।

19-09-2012 निमित्त आत्माओं का कहना और मेरा करना निमित्त आत्माये अर्थात गुरु भाई। तो निमित्त आत्माओ ने कहा अर्थात हर बात के लिए बाप दादा जिम्मेवार। उनकी आज्ञा माना बाबा की आज्ञा। सो आज्ञाकारी बनते मुझे करना ही है।

20-09-2012: मेरा कहना और मेरा करना। हमारे बोल महावाक्य हो, वरदानी हो, जो हमने कहा व हुआ, यह सब तब होगा। जब मेरी कथनी और करनी में समानता होगी। इसलिए जो सोचना है बाबा को साथ रख कर सोचना है जो कहना है बाबा को साथ अनुभव करते कहता है। जो करना है बाबा को साथी बनाकर करना है।

सम्पूर्णता की समीपता का दूसरा लक्षण- **सन्तुष्टता की शक्ति से चमकते हुए मुस्कारते हुए मिलन मनाने वाले।**

21-09-2012: बाबा मिला सब कुछ मिला। सारी सृष्टि का मालिक हमारा हो गया। सर्व खजानो का मालिक हमारा हो गया। ऐसे स्वयं को मालामाल अनुभव करते बाप के साथ खुशी मे उड़ते रहना है।

22-09-2012: जो पाना था वह पा लिया। स्वयं वरदाता, भाग्यविधाता बाप मेरा हो गया। ऐसे स्वयं को भरपूर अनुभव करते सन्तुष्टता की शक्ति से चमकते रहना है। एक दो से मिलते हुए खुशनुमा हो मिलना है।

23-09-2012: अप्राप्त नही कोई वस्तु ब्राह्मणों के खज़ाने में। मेरे सर्व खज़ाने भरपूर है। मैं आत्मा सन्तुष्टमणी के रुप से बाप दादा से मिले सर्व खज़ानो को सर्व की सेवा में लगा रही हूँ।

24-09-2012: सर्व को सन्तुष्ट रखने से मुझे सर्व की दुआए मिल रही है। मैं सन्तुष्टमणी सन्तुष्टता की शक्ति के वायब्रेशन फैलाये वायुमण्डल में सन्तुष्टता की लहर फैला रही हूँ। मैं स्वयं से सन्तुष्ट हूँ। परिवार, विश्व मेरे से सन्तुष्ट है। बाप दादा भी मेरे पुरुषार्थ व स्थिति से सन्तुष्ट है।

सम्पूर्णता की समीपता का तीसरा लक्षण- **चेहरे से व्यर्थ की समाप्ति और सदा स्मृति स्वरुप की झलक। सदा मस्तक में द्विय ज्योति चमकती रहे।**

25-09-2012: बापदादा से दादीयों से मेरा प्यार है। सवेरे से रात्रि तक मेरे से ऐसा कोई संकल्प, बोल, कर्म ऐसा न हो जो बाप को, दादीयों को या किसी को भी पसन्द न हो। ऐसा अटेन्शन रख मुझे व्यर्थ से मुक्त रहना है।

26-09-2012: सर्व आत्माये महान है मुझे ये महसूस करना है सदा मेरे मस्तक में द्विय ज्योति आत्मा चमक रही है। बाप की ज्योति से हर आत्मा की ज्योति जग रही है।

27-09-2012: अभी समय है अपने चेहरे और चलन से बाप को प्रत्यक्ष करने का। तो चेहरा खुश:नुमा हो, स्मृति में बाबा की मीठी याद समायी हुई हो। जो भी मुझे देखे उसे भी बाबा की स्मृति आये, उसका चेहरा भी खुश:नुमा हो जाये।

28-09-2012: बाबा से मिली शिक्षाओ में मन रमण करता रहे। नशा रहे, मुझे व्यर्थ से मुक्त हो स्मृति स्वरुप हो रहना है। समय, संकल्प व अन्य खज़ानो को सफल कर सफलता का सितारा बनना है।

सम्पूर्णता की समीपता का चौथा लक्षण- **समर्थ बन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति के वायब्रेशन फैलाये।**

29-09-2012: मै विजयी माला का मणका हूँ। सम्पूर्णता की समीपता के लक्षण मेरे में इमर्ज हो रहे हैं। सम्पूर्णता को पाते विजयी रत्न एक दो के समीप आ रहे है।

30-09-2012: मैं विजयी रत्न हूँ। स्वयं के मन व बुद्धि का मालिक हूँ। मुझ आत्मा की द्विय शक्तियां चारो ओर फैल रही है। मेरा मन, बुद्धि, शरीर और ये विश्व श्रेष्ठ वायब्रेशन ग्रहण कर रहा है।

1-10-2012: मैं महान कर्म योगी हूँ। मेरे लिए हर कार्य सहज है। यह विश्व परिर्वतन का महान कार्य मुझे बाप द्वारा मिला हुआ है। बाप दादा स्वयं साथी बन मेरे द्वारा श्रेष्ठ कार्य करा रहे हैं। मेरा भाग्य बना रहे है। बाबा आपका शुक्रिया।

2-10-2012: स्वयं भगवान मेरा साथी है उनकी शक्ति मुझ आत्मा में समा रही है। उनकी ही शक्ति विश्व को स्वर्ग बना रही है। बाबा की शक्ति हमें हमारे लक्ष्य के समीप ला रही है।

सम्पूर्णता की समीपता का पांचवा लक्षण- **मन्सा,वाचा,कर्मणा सम्बन्ध सम्पर्क में उन्हें जो भी देखे यही कहे वाह परिवर्तन वाह।**

3-10-2012: नियमित रुप से मुझे अपनी दिनचर्या सेट करनी है अमृतवेले से ही याद रखना है मै ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। मैं फरिश्ता सारे विश्व को शान्ति की सकाश दे रहा हूँ।

4-10-2012: द्विय बुद्धि द्वारा मुझे ब्रह्मा बाप को इमर्ज करना है ब्रह्मा बाप के चरित्र समान स्वयं का ऊँचा चरित्र बनाना है। ब्रह्मा बाप के कदमो पर कदम रख बाप समान आदर्शमूर्त बनना ही है।

5-10-2012: मैं दृढ़ संकल्प धारी आत्मा हूँ। दृढ़ता के संकल्प को चारों ओर से श्रेष्ठ संकल्प व प्रयास के पत्थर लगाये दृढ़ता के फाउण्डेशन को मजबूत कर रहा हूँ। दृढ़ता के आधार से अपने मध्य के संस्कारो को परिवर्तन कर अनादि आदि संस्कार स्वयं में भर रही हूँ।

6-10-2012: अमृतवेले पावर फुल योग के बाद मुझे भक्तो की सेवा करनी है। मैं विजयी माला का मणका अपनी पावरफुल वृत्ति से सुख-शांति के वायब्रेशन दे भक्तो को भी बापदादा के समीप ला रहा हूँ। वाह परिवर्तन वाह के निमित्त बन सर्व आत्माओ को बाप की सकाश पहुँचा रहा हूँ।

सम्पूर्णता की समीपता का छठा लक्षण- **हर आत्मा के प्रति दिल का स्नेह व सहयोग**

7-10-2012: मैं आत्मा अपनी ज्वालामुखी योग युक्त स्थिति द्वारा स्वयं के संस्कारो का परिर्वतन कर स्वयं को सहयोग दे रही हूँ। मेरी पावरफुल किरणे प्रकृति व सर्व आत्माओ को परिर्वतन में सहयोग दे रही है।

8-10-2012: मुझे स्नेही सहयोगी बनकर हर सेन्टर,हर सेवास्थान तक ज्वालामुखी योग का वायब्रेशन फैलाना है। मेरी श्रेष्ठ मन्सा शक्ति द्वारा बाबा की शक्तिशाली किरणे ब्राह्मण साथियों व सर्व आत्माओ को प्राप्त हो रही है उन्हें श्रेष्ठ परिवर्तन में सहयोग मिल रहा है।

9-10-2012: मेरे सम्पन्न बनने की धुन से सर्व तरफ उमंग उत्साह की लहर फैल रही है। तीव्र पुरुषार्थ के इस वातावरण में हर आत्मा तक मेरे दिल का सहयोग पहुँच रहा है। बापदादा के स्नेह कि किरणे सर्व को, एक दो का सहयोगी बना रही है।

10-10-2012: मेरे चेहरे और चलन से आत्माओ को खुशी का वरदान मिल रहा है। मेरे खुशनुमा चेहरे को देख दु:खी, अशांत आत्माए भी खुशी का अनुभव कर रही है। मेरी यह रुहानी खुशी विश्व कल्याण के महान कार्य में सर्व आत्माओं को स्नेही सहयोगी बना रही है। बाबा वतन से वरदानो की वर्षा कर रहे है।

सम्पूर्णता की समीपता का सातंवा लक्षण- **शुभ भावना,शुभ कामना सम्पन्न आत्मा**

11-10-2012: जैसे बापदादा की हर आत्मा के लिए यही शुभ भावना है हर बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बने। ऐसे मैं शुभ चिन्तक आत्मा स्वयं को सम्पन्न सम्पूर्ण बनाने के साथ-साथ अपने भाई बहनो के लिए श्रेष्ठ भावना रख आगे बढ़ रही हूँ।

12-10-2012: न मुझसे कोई नाराज हो, न भारी हो, सब अपने परिवार के है। मुझे हरेक के प्रति शुभ भाावना,शुभकामना से रहम और कल्याण की दृष्टि रख सहयोगी बनना ही है।

13-10-2012: मुझे कर्म में एक दो के स्नेही बन सहयोग का वातावरण बनाना है। ज्वालामुखी योग कर श्रेष्ठ पावरफुल वायब्रेशन फैलाने है। सर्व के लिए शुभ कामनाए,शुभ भावनाएं रख दिल से एडवान्स पार्टी की आश पूरी करनी ही है।

14-10-2012: मैं आत्मा शुभभावना और शुभ कामना से सम्पन्न हूँ। पूरे ब्राह्मण परिवार में तीव्र पुरुषार्थ की लहर है। सर्व आत्माऐ उमंग उत्साह से एक दो के प्रति शुभ भावना रख एक दो को आगे बढ़ा रहे हैं।

सम्पूर्णता की समीपता का आँठवा लक्षण- **लाईट -माईट स्वरुप के अनुभवी मूर्त**

15-10-2012: ज्वालामुखी योग अर्थात लाइट माइट स्वरुप स्थिति। मेरी ऐसी पावर फुल स्थिति से चारो ओर लाईट-माईट फैल रही है। बाबा से आ रही इन लाईट-माईट की किरणों से चारो ओर लाईट-माईट का प्रभाव फैल रहा है।

16-10-2012: मैं मास्टर सर्व शक्तिवान आत्मा अपने स्वमान की सीट पर सैट हूँ। मुझ मास्टर सर्व शक्तिवान का साथी स्वयं भगवान है। उनकी सर्व शक्तियों कि किरणे मुझमें लाईट-माईट भर रही है। ये लाईट-माईट की किरणें चारो ओर फैल रही है चारों ओर लाईट ही लाईट है। माईट ही माईट है।

17-10-2012: स्वयं भाग्य विधाता भगवान बाप मेरा हो गया। वे मेरा भाग्य 21जन्मो के लिए बना रहे हैं। श्रेष्ठ भाग्य बनाने के लिए सफल करने का बाबा ने हमें मन्त्र दिया है। मैं आत्मा अपना सफल कर लाईट-माईट होती जा रही हूँ। वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य वाह,वाह भाग्यविधाता बाबा वाह।

18-10-2012: स्वयं वरदाता, द्विय दृष्टि विधाता भगवान बाप मेरे सामने है। सर्व वरदानों से मुझे वे भरपूर कर रहें है। बापदादा के वरदानों ने मुझे अपने समान लाईट-माईट स्वरुप बना दिया है। जन्म जन्मान्तर के लिए मुझे अपने समान बना दिया है। शुक्रिया बाबा आपका पद्मापदम शुक्रिया।

बी.के सुधीर कुमार
शांतिवन